RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-04
April -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

उच्च शिक्षा में शुद्ध उच्चारण और वर्तनी की वर्तमान स्थिति

[1]लता ; [2]डॉ. अनु जी.एस.

[1]शोधार्थी, अध्यापक शिक्षा विभाग, शिक्षा स्कूल हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

[2]सहायक आचार्यअध्यापक शिक्षा विभाग, शिक्षा स्कूल हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 April 2019

Keywords
शिक्षा और भाषा राजभाषा.

ABSTRACT

शिक्षा और भाषा में घनिष्ठ संबंध है| शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए भाषा की आवश्यकता होती है| भाषा के माध्यम से ही शिक्षा संबंधी ज्ञान को प्राप्त किया जा सकता है| यदि यह भाषा शुद्ध न हो तो अर्थसंगत ज्ञान प्राप्त करना असंभव है| हिंदी भाषा की शुद्धता उसके व्याकरण पर निर्भर करती है | हिंदी भाषा के व्याकरण में प्रत्येक ध्वनि के लिए एक निर्धारित वर्ण या अक्षर होने के कारण यह एक वैज्ञानिक भाषा कहलाती है| हमारे देश में हिंदी भाषा राजभाषा के रूप में प्रचलित एवं व्यवस्थित है, परन्तु आज भी कक्षाओं में छात्र हिंदी भाषा में पठन एवं लेखन करने में सक्षम नहीं है| वर्तमान समय में प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च सभी स्तरों पर छात्र हिंदी भाषा में उच्चारण और वर्तनी से संबंधित कई प्रकार की अशुद्धियाँ कर रहें हैं जो उनके ज्ञान प्राप्ति के क्षेत्र में बाधक के रूप में प्रतीत हो रहीं हैं| कई बार प्राथमिक स्तर की उच्च कक्षा में छात्र हिंदी माध्यम के स्कूलों में भी हिंदी की पाठ्यपुस्तक में पाठ को सही रूप से पढ़ नहीं पाते हैं| वे वर्णों को धीरे-धीरे जोड़ते हुए शब्द तथा शब्दों को धीरे-धीरे जोड़ते हुए वाक्य बनाने का प्रयास करते हैं| यही स्तर माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर की कक्षाओं में भी पाया गया है| जिसके कारण समाज में भाषा के शुद्ध रूप का ह्रास हो रहा है| स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के छात्रों में भी उच्चारण और वर्तनीगत अशुद्धियाँ पाई गई हैं| आज के कॉलेज छात्र तो हिंगलिश भाषा का अत्यधिक प्रयोग कर रहे हैं जिसके कारण वह एक भाषा की मर्यादा को भूलते ही जा रहें हैं| जब हम शिक्षक प्रशिक्षण की बात करते है तब हिंदी शिक्षण की कक्षाओं में भी छात्रों का यही हाल दिखाई देता है| जिसके कारण समाज को ऐसे शिक्षक मिल जाते हैं जो भावी छात्रों की भाषागत अशुद्धियों को दूर करने में असमर्थ होते हैं| अतः इस शोधपत्र द्वारा उच्च शिक्षा में उच्चारण और वर्तनी संबंधी अशुद्धियों की वर्तमान स्थितियों को उजागर करने का प्रयत्न किया गया है|

प्रस्तावना

जिस तरह स्वस्थ शरीर के लिए स्वच्छ वातावरण की आवश्यकता होती है उसी प्रकार स्वस्थ सम्प्रेषण के लिए शुद्ध भाषा की आवश्यकता होती है| भाषा के शुद्ध व आदर्श रूप के द्वारा ही उसे ठीक प्रकार समझा जा सकता है| इस प्रकार चाहे वह सम्प्रेषण का क्षेत्र हो या शिक्षा का, जब तक भाषा अर्थ संगत न हो , वह अपने उद्देश्यों को पूर्ण नहीं कर पाती| भाषा अभिव्यक्ति एवं विचार विनिमय का मानव-निर्मित सफल साधन है| इसे हम ज्ञान प्राप्ति का भी प्रमुख साधन कह सकते है| भाषा के महत्त्व को दर्शाते हुए कविवर भारतेंदु हरिश्चंद्र ने कहा कि –

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल|
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल||"

अर्थात् हृदय के उदगार तो अपनी भाषा में ही प्रकट किये जा सकते हैं| अपनी भाषा में ही अपने विचारों की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति हो सकती है| इस प्रकार जब तक कही या लिखी बात को समझा नहीं जाता तब तक ज्ञान प्राप्ति की आशा करना व्यर्थ ही है| इस तरह बालक की सामाजिक तरक्की और प्रगति का द्वार निज भाषा अर्थात् अपनी भाषा के शुद्ध रूप के ज्ञान द्वारा ही खुल सकते है|

हिंदी भाषा एक ध्वन्यात्मक भाषा है| जिसका ध्वनि-तत्व बड़ा वैज्ञानिक है| इसमें प्रत्येक ध्वनि के लिए अलग-अलग स्वरों की व्यवस्था है| व्यक्ति जैसा बोलता है, वैसा ही लिखता है| यदि उसे ध्वनियों के वर्गीकरण का ज्ञान नहीं होगा तो उसके उच्चारण में शुद्धता नहीं होगी और उच्चारण में शुद्धता न होने पर वर्तनी/लेखनी भी अशुद्ध होगी| अतः शुद्ध उच्चारण के साथ वर्तनी में भी शुद्धता बनाए रखने के लिए यह जरूरी है कि बच्चों को ध्वनियों के वर्गीकरण के उच्चारण व लेखन का पूर्ण ज्ञान करवाया जाए|

RRIJM 2015, All Rights Reserved

भाषा के शुद्ध और स्थाई रूप को निश्चित करने के लिए नियमबद्ध योजना की आवश्यकता होती है और उस नियमबद्ध योजना को हम व्याकरण कहते है| कोई भी मनुष्य शुद्ध भाषा का पूर्ण ज्ञान व्याकरण के बिना प्राप्त नहीं कर सकता| व्याकरण के चार आधारभूत स्तर या इकाइयाँ हैं – वर्ण या ध्वनि, शब्द, पद और वाक्य| वर्ण या ध्वनि के जोड़ से शव्द बनते है और शब्दों के जोड़ से पद तथा पदों के अर्थ पूर्ण योग से वाक्य बनते है| इन सभी के उचित प्रयोग से शुद्ध भाषा उत्पन्न होती है| इस दृष्टि से व्याकरण सम्मत भाषा ही शुद्ध भाषा कहलाती है| परन्तु आज के समय में स्कूली जीवन में छात्र शुद्ध भाषा का अनुकरण नहीं कर रहें हैं| जिसके कारण उच्चारण और वर्तनीगत अशुद्धियां हो रही है, और इसी कारण वश छात्र शैक्षिक ज्ञान प्राप्त करने में असमर्थ रह रहें हैं|

उच्चारण और वर्तनी

मुख के विभिन्न अवयवों से घर्षण करते हुए जब प्राण वायु के साथ ध्वन्यात्मक सांकेतिक चिन्ह, मौखिक अभिव्यक्ति के रूप में बाहर निकलते है तो उसे उच्चारण कहते है| यह भाषा का मौखिक रूप है| जो मनुष्य के विचारों और भावों की ओर संकेत करता है | उच्चारण संबंधी अशुद्धियाँ हैं - स्वर-वृद्धि, व्यंजन वृद्धि, स्वरागम, स्वर-लोप, व्यंजन-लोप, मात्राओं संबंधी त्रुटियाँ, व्यंजन संबंधी, अल्पप्राण और महाप्राण का भ्रम, हकलाना आदि| इसके साथ ही कुछ वर्तनीगत अशुद्धियाँ होतीं हैं| प्रत्येक भाषा को लिखित रूप प्रदान करने के लिए कुछ निर्धारित प्रतीकों या चिह्नों का प्रयोग किया जाता है| मन के भावों, विचारों आदि को लिखित रूप में प्रकट करने के लिए उन निर्धारित प्रतीकों का प्रयोग करना पड़ता है| परन्तु इनका प्रयोग उस भाषा के व्याकरण-नियमों के अनुरूप होता है| उसे ही वर्तनी कहा जाता है| अतः हिंदी भाषा में वर्तनी या अक्षर-विन्यास से तात्पर्य देवनागरी लिपि के अनुरूप तथा व्याकरण के नियमों को ध्यान में रखते हुए शब्दों को शुद्ध रूप में लिखना है| वर्तनीगत अशुद्धियाँ हैं - मात्रा संबंधी अशुद्धियाँ, सयुंक्त अक्षर संबंधी अशुद्धियाँ, द्वित्व व्यंजनों के प्रयोग, रेफ संबंधी अशुद्धियाँ, अनुस्वार और अनुनासिक संबंधी अशुद्धियाँ, व्यंजन संबंधी अशुद्धियाँ, वर्णों का अनावश्यक प्रयोग, अल्पप्राण ध्वनियों के स्थान पर महाप्राण ध्वनियों का प्रयोग आदि | उच्चारण और वर्तनी के आपसी संबंधो को दर्शाते हुए डॉ. भोलानाथ तिवारी कहते हैं कि 'वर्तनी का सबसे बड़ा आधार तो उच्चारण (आधुनिक, परंपरागत या ध्वनि-परिवर्तन से विकसित रूप) है| उसके बाद शब्द-रचना का स्थान है| शेष निर्णय, अशुद्धि या प्रभाव आदि कुछ ही वर्तनियों के आधार बन पाते है|' (तिवारी,2018)

वर्तमान समय में प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च सभी स्तरों पर छात्र हिंदी भाषा में उच्चारण और वर्तनी से संबंधित कई प्रकार की अशुद्धियाँ कर रहें हैं जो उनके ज्ञान प्राप्ति के क्षेत्र में बाधक के रूप में प्रतीत हो रहीं हैं| कई बार प्राथमिक स्तर की उच्च कक्षा में छात्र हिंदी माध्यम के स्कूलों में भी हिंदी की पाठ्यपुस्तक में पाठ को सही रूप से पढ़ नहीं पाते हैं| वे वर्णों को धीरे-धीरे जोड़ते हुए शब्द तथा शव्दों को धीरे-धीरे जोड़ते हुए वाक्य बनाने का प्रयास करते हैं| यही स्तर माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर की कक्षाओं में भी पाया गया है| जिसके कारण समाज में भाषा के शुद्ध रूप का ह्रास हो रहा है| स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के छात्रों में भी उच्चारण और वर्तनीगत अशुद्धियाँ पाई गई हैं| आज के कॉलेज छात्र तो हिंगलिश भाषा का अत्यधिक प्रयोग कर रहे हैं जिसके कारण वह एक भाषा की मर्यादा को भूलते ही जा रहें हैं| जब हम शिक्षक प्रशिक्षण की बात करते है तब हिंदी शिक्षण की कक्षाओं में भी छात्रों का यही हाल दिखाई देता है| एक तरफ तो वह शिक्षण के कौशलों एवं विभिन्न विधियों को सीख रहें होते हैं और दूसरी तरफ उनकी भाषा संबंधी अशुद्धियाँ एवं समस्याएं सामने आती हैं| जिसके कारण वह अपने शिक्षण संबंधी कौशल एवं निपुणताओं को निखारने में असमर्थ रहते हैं| जिसके कारण समाज को ऐसे शिक्षक मिल जाते हैं जो भावी छात्रों की भाषागत अशुद्धियों को दूर करने में असमर्थ होते हैं| अतः इस शोधपत्र द्वारा उच्च शिक्षा में उच्चारण और वर्तनी संबंधी अशुद्धियों की वर्तमान स्थितियों को उजागर करने का प्रयत्न किया गया है|

अध्ययन की प्रासंगिकता

हिंदी में उच्चारण और वर्तनी के संबंध में पूर्व में जो प्रयास हुए है उन्ही के कारण वर्तमान समय में हिंदी भाषा के मानक रूप को देखा जा सकता है| हिंदी भाषा के इस मानक स्वरुप के माध्यम से ही हम हिंदी भाषा के अंतर्गत उच्चारण और वर्तनी के शुद्ध रूप की बात कर सकते है| यह शुद्ध रूप हमें जिन प्रयासों द्वारा प्राप्त हुआ है उनका वर्णन इस प्रकार हैं-

हिंदी में वर्तनी के विषय में सर्वप्रथम छत्रधारी सिंह ने 1884 में 'लेखनियम' शीर्षक की एक लघु पुस्तिका में वर्तनी समस्याओं के लिए संक्षिप्त समाधान प्रस्तुत किये| इसके बाद संयुक्त रूप से नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ने वर्तनी एवं हिंदी व्याकरण के संबंध में 1898 में विद्वानों को एकत्रित कर एक समिति का निर्माण किया जिसने दो वर्षों बाद सभा को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसे सभा ने 1900 में प्रकाशित किया| इस रिपोर्ट में हिंदी व्याकरण के कारकों, समास, मात्राओं, अनुस्वार, खड़ीपाई, ध्वनियों तथा अंग्रेजी ध्वनियों और विरामचिह्न आदि के संबंध में शुद्धता और अशुद्धता को स्पष्ट किया| सभा द्वारा प्रचारित सामग्री का अंग्रेजी माध्यम में होने के कारण सर्वमान्य जनता में प्रचलित न हो सकी| इसके पश्चात् 1903 में हिंदी भाषा को मानक रूप प्रदान करने का कार्य आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती पत्र के माध्यम से किया| उन्होंने पत्रिका में मुद्रण के लिए आई विभिन्न रचनाओं में संशोधन करके हिंदी व्याकरण और वर्तनी के स्थिरीकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया| आचार्य कामता प्रसाद गुरु ने 1920 में प्रकाशित 'हिंदी व्याकरण', और आचार्य

रामचंद्र वर्मा ने 1949 में अपनी पुस्तक 'अच्छी हिंदी' में वर्तनी से संबंधित कुछ मान्यताएं दर्शाई| इसके बाद आचार्य किशोरीदास वाजपेयी ने अपने ग्रंथों- 'अच्छी हिंदी का नमूना' (1948), 'राष्ट्रभाषा का प्रथम व्याकरण' (1949), 'हिंदी निरुक्त', 'अच्छी हिंदी'(1952), 'हिंदी शब्दानुशासन' (1958) तथा 'हिंदी की वर्तनी तथा शब्द विश्लेषण' (1969) में हिंदी भाषा और वर्तनी के संबंध में स्पष्टीकरण किया| डॉ. भोलानाथ तिवारी ने भी हिंदी वर्तनी के संबंध में कई लेख लिखे जिन्हें उन्होंने 'हिंदी वर्तनी की समस्याएं' नामक शीर्षक रुपी लेख में सम्माहित किया| 1957 में राष्ट्रीय केंद्रीत शैक्षिक संस्थान ने हिंदी वर्तनी पर एक कार्यशाला आयोजित की जिसमें माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थिओं द्वारा की जाने वाली हिंदी वर्तनी की अशुद्धियों और उनके निराकरणों पर विचार किया| जिसे 1958 में 'हिंदी वर्तनी' शीर्षक से पुस्तिका के रूप में प्रकाशित किया| 1960 में अखिल भारतीय हिंदी प्रकाशक संघ ने हिंदी वर्तनी की एकरूपता के लिए एक समिति गठित की जिसमें संयुक्त एवं वियुक्त शब्दों, शब्दों में ये व यी या ए व ई के प्रयोग, हिंदी में संस्कृत के शब्दों, अन्य भाषा के शब्दों व ध्वनिचिह्नों, अनुस्वार, चन्द्रबिन्दु आदि के संबंध में सुझाव दिए| भारतीय हिंदी परिषद् ने 1961 में अपनी मुख-पत्रिका 'हिंदी अनुशीलन' तथा 'प्रकाशन समाचार' में हिंदी वर्तनी की एकरूपता के लिए प्रस्तावित नियमों को प्रकाशित किया|

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने 1961 में हिंदी वर्तनी को मानक रूप देने के लिए एक समिति का गठन किया| 1962 में निर्णय पत्रक रूप में 'प्रकाशन समाचार' और 'सप्त सिन्धु' नामक पत्रिका में 1963 विधानभवन टीचर्स कॉलेज, उदयपुर में छः दिनों की गोष्ठी में विद्यार्थियों द्वारा लेखन में की जाने वाली अशुद्धियों पर विचार कर प्रतिवेदन को प्रकाशित किया| 1966 में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग ने भी हिंदी वर्तनी की समस्या पर अखिल भारतवर्षीय गोष्ठी का आयोजन कर उसकी रिपोर्ट को विभाग की शोध-पत्रिका 'अभिनव भारती' में प्रकाशित किया| डॉ. लक्ष्मीनारायण शर्मा ने अपनी पुस्तक 'देवनागरी लेखन तथा हिंदी वर्तनी-व्यवस्था' में 1976 में 75 पृष्ठों में हिंदी वर्तनी के नियम, अशुद्धियों के कारण-प्रकार, उपाय एवं संशोधन, परीक्षण व मूल्यांकन से संबंधित विचार प्रस्तुत किये| 1978 में रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर के भाषाविज्ञान विभाग ने हिंदी वर्तनी के स्थिरीकरण के लिए दस नियमों का सुझाव रखा| 1980 में डॉ. रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव ने 'हिंदी का शैक्षिक व्याकरण' पुस्तक में 'अशुद्धि के प्रकार और शोधन' अध्याय में विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाली अशुद्धियों के संबंध में विचार प्रस्तुत किये| इस प्रकार वर्तनी सहित उच्चारण संबंधित अशुद्धियों के संबंध में कई विद्वानों और समितियों ने आवश्यक सुझाव और सुधार प्रस्तुत किये परन्तु आज भी देश के कक्षा कक्ष में इस प्रकार की अशुद्धियाँ हो रही हैं| जिसके निवारण करने के लिए अध्यापकों को प्रशिक्षित करना आवश्यक है|

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

हिंदी भाषा में उच्चारण और वर्तनी संबंधी अशुद्धियों और उनके निवारण संबंधी विषय क्षेत्र का अध्ययन करने पर कुछ प्रमुख शोध कार्य मिले, जिनमें पूर्व समय में इस विषय से संबंधित समस्या के अध्ययन व निराकरण के लिए प्रयत्न हुए हैं| ये संबंधित शोध कार्य इस प्रकार हैं-

ऐमल गोमती एम एस (1982) ने केरल के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में वर्तनी की अशुद्धियों और उनके कारणों का अध्ययन किया, जिसके लिए उन्होंने उपचारात्मक सुझाव दिए| आर.ए श्रीनिवास राव (1982) द्वारा स्कूली छात्रों के पठन में आने वाली कठिनाइयों के मुख्य कारणों का अध्ययन किया| एन जी भानुशाली (1985) ने अपने शोध कार्य में कक्षा पांच के विद्यार्थियों द्वारा प्रयुक्त हिंदी शब्दावली का अध्ययन किया| टी.के.मोहम्मद (1986) ने अपने शोधकार्य में छात्रों द्वारा अंग्रेजी लेख में की जाने वाली त्रुटियों का विश्लेषण, वर्गीकरण तथा निदानात्मक परीक्षण एवं सुधारात्मक उपायों का विवरण किया| एस डी कपाडिया (1988) ने महाविद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों हेतु अंग्रेजी भाषा की त्रुटियों के संबंध में निदान के लिए कार्य योजना का निर्माण व परीक्षण किया| एस मित्तल (1991) ने कक्षा 6, 7 व 8 के छात्रों द्वारा संस्कृत भाषा में दोषों को जान कर, संस्कृत वर्तनी पर उपचारात्मक शिक्षण का प्रभाव ज्ञात किया| इस ओर उन्होंने संस्कृत त्रुटियों के निवारण हेतु उपचारात्मक कार्यक्रमों को सार्थक सिद्ध किया| पाल शुक्ल (1998) ने अपने शोधकार्य में प्राथमिक स्तर पर हिंदी वर्तनी की त्रुटियों के कारण तथा उनके निवारण में योजना निर्मित करना सार्थक है, के संबंध में अध्ययन किया| समिधा रानी (2004) ने संस्कृत भाषा में उच्चारण से संबंधित समस्याओं के मुख्य कारणों तथा समाधानात्मक शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन किया| दीप्ती त्रिपाठी (2010) ने अपने शोध में नवीं कक्षा के विद्यार्थियों की उच्चारण और लेखन संबंधी त्रुटियों, उनके निदान तथा उपचारात्मक शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन किया| कनक सक्सेना (2012) ने अपने शोधकार्य में राजस्थान के कक्षा 12 के हिंदी भाषा के विद्यार्थियों की वर्तनीगत अशुद्धियों के कारण तथा निदानात्मक परीक्षण तैयार कर उनके प्रभाव का अध्ययन किया|

इस प्रकार विभिन्न क्षेत्रों में किये गए अध्ययनों के पुनरावलोकन से यह कहा जा सकता है कि उच्च स्तर के छात्रों की उच्चारण एवं वर्तनी से संबंधित अशुद्धियों के संबंध में अध्ययन करने की आवश्यकता है| चुकि यह उच्च स्तर के छात्र ही भावी शिक्षक बनने की कतार में खड़े है तो इनकी भाषा भी शुद्ध होनी आवश्यक है जो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सामान्य स्तर पर प्रतीत नहीं हो रही है|

RRIJM 2015, All Rights Reserved

शोध पत्र के उद्देश्य

शोधकत्री प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयत्न करेगी |

-उच्च स्तर के छात्रों में उच्चारण एवं वर्तनी संबंधी अशुद्धियों की वर्तमान स्थिति को पहचानना|

-उच्च स्तर के छात्रों की उच्चारण एवं वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के संबंध में विभिन्न संस्थानों जैसे- हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, राज्य के स्नातक संस्थान, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, राजकीय शिक्षा स्नातक संस्थान आदि के अध्यापकों के मतों को एकत्र करना |

शोध प्रविधि

इस शोधपत्र में शोधकत्री ने जिस शोधविधि, प्रतिदर्श एवं उपकरण का प्रयोग किया है वह है-

शोधविधि – इस शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए गुणात्मक दृष्टिकोण का प्रयोग किया गया है| जिसमें केस विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है| इस केस अध्ययन के लिए साक्षात्कार विधि का प्रयोग करते हुए विभिन्न संस्थानों के प्राध्यापकों एवं आचार्यों से संबंधित विषय पर जानकारी एवं उनके मतों को एकत्र किया|

प्रतिदर्श – इस शोधकार्य के लिए द्वितीयक स्रोतों के रूप में विभिन्न शोधकार्यों, पत्रिकाओं में छपे हुए लेखों और विभिन्न पुस्तकों से जानकारी एकत्रित की गई| साथ ही प्राथमिक स्रोतों के रूप में हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला क्षेत्र के विभिन शिक्षण संस्थानों जैसे हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, राज्य स्नातक महाविद्यालय, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, और राजकीय शिक्षा महाविद्यालय के हिंदी विभाग के प्राध्यापकों का चयन किया गया|

साधन एवं उपकरण – इस शोधकार्य को पूर्ण करने के लिए द्वितीयक स्रोतों अर्थात् पुस्तकों, शोधकार्यों,एवं लेखों से एकत्रित जानकारी एवं चयनित प्रतिदर्श से उनके मतों को एकत्रित करने के लिए 13 प्रशों की साक्षात्कार अभिसूची बनाई गई| जिसमें उच्च स्तर के छात्रों द्वारा उच्चारण और वर्तनी संबंधी अशुद्धियों ,उनके कारणों, प्रभावों एवं उनके लिए आवश्यक सुझावों के संबंध में प्रश्न पूछे गए|

केस विश्लेषण एवं विचार-विमर्श

उच्च स्तर पर हिंदी भाषा में उच्चारण और वर्तनी संबंधी अशुद्धियों का अध्ययन करते समय शोधकत्री ने विभिन्न उच्च स्तरीय शिक्षण संस्थानों के हिंदी विभाग के प्राध्यापकों के साक्षात्कार करते हुए उनके मतों का संग्रह किया जो इस प्रकार है-

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला में हिंदी विभाग में कार्यरत हिंदी प्राध्यापक ने उच्च स्तर पर छात्रों द्वारा उच्चारण और वर्तनी से संबंधित अशुद्धियां करने के प्रति अपनी सहमती व्यक्त करते हुए कहा कि छात्र प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर की जाने वाली अशुद्धियों को अभी भी कर रहें हैं| यह अशुद्धियाँ स्वरों और व्यंजनों के प्रयोग से संबंधित हैं जैसे – प्राप्त के लिए प्रापत, निम्न के लिए निमन, प्रसाद के लिए परसाद, ढ-ड संबंधी अशुद्धियाँ आदि| इसके लिए प्राथमिक स्तर पर आधार-शिक्षण की कमी, ज्ञान का अभाव एवं प्रादेशिक भाषा का प्रभाव आदि को मुख्य कारण के रूप में बताया है| उनके अनुसार हिंसी भाषा के ज्ञान के अभाव के कारण छात्र अन्य विषयों में ज्ञान से संबंधित तथ्यों के आत्मसातीकरण में समस्या अनुभव करते हैं जिसके कारण उनकी ग्राह्य क्षमता क्षीण हो जाती है और वह ज्ञान के क्रमिक रूप को ग्रहण नहीं कर पाते हैं| उन्होंने उच्च स्तर पर उच्चारण और वर्तनी में त्रुटियों के निराकरण की कोई व्यवस्था न होने के लिए भारतीय शिक्षा नीति को एक कमजोर नीति बताया है| उन्होंने स्नातकोत्तर स्तर पर भाषा विज्ञान के ज्ञान को व्यावहारिक रूप से अभ्यास में प्रस्तुत करने पर जोर दिया| साथ ही प्राथमिक स्तर पर पठन-पाठन एवं लेखन अभ्यास को महत्त्व देने के लिए प्रोत्साहित किया| पुस्तकों में पाई जाने वाली अशुद्धियों के संबंध में उन्होंने पुस्तकों के समीक्षात्मक अध्ययन पर जोर दिया| उनके अनुसार उच्च स्तर पर व्याकरण शिक्षण द्वारा ही शिक्षा के स्तर में हो रही गिरावट को रोका जा सकता है| जिसके लिए उन्होंने परिसंवाद विधि द्वारा विषय क्षेत्र के अग्रणी व्यक्तित्वों के व्याख्यान, भाषा के लिखित व मौखिक रूप के अभ्यास से संबंधित कार्यशाला के आयोजन, विषयानुसार चर्चा-परिचर्चा एवं प्रश्नोत्तर विधि के प्रयोग पर बल दिया|

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, धर्मशाला में हिंदी विभाग के हिंदी प्राध्यापक ने भी इस विषय से संबंधित छात्रों एवं प्रशिक्षु छात्रों की स्थिति पर चिंता जताई| उनके अनुसार भावी शिक्षक भी अपने प्रशिक्षण कार्यकाल के दौरान कई प्रकार की अशुद्धियां करते हैं जैसे स-श-ष, ब-व, रेफ़ व रकार संबंधी अशुद्धियाँ| जिनका मुख्य कारण अंग्रेजी भाषा के प्रति आकर्षण, पहाड़ी एवं प्रादेशिक भाषा का प्रभाव, व्याकरणिक ज्ञान का अभाव व उचित मार्गदर्शन की कमी है| उन्होंने कहा कि “हस्त और मस्तिष्क का संतुलन ही शुद्ध लेखन को प्रोत्साहित करता है|” उन्होंने उच्च स्तर पर व्याकरण शिक्षण के अभाव के कारण छात्रों द्वारा हो रही अशुद्धियों को दूर करने के लिए संस्कृत शिक्षकों द्वारा व्याकरण शिक्षण संबंधी व्यवस्था, भाषा प्रयोगशाला की व्यवस्था के लिए सरकार द्वारा उचित कदम, NCERT एवं SCERT द्वारा भाषा निर्देशित कार्यशाला की व्यवस्था एवं पुस्तकों के समीक्षात्मक कार्य में शिक्षकों को जोड़ना आदि प्रावधान करने पर जोर दिया| उनके अनुसार प्राथमिक स्तर व माध्यमिक स्तर के साथ-साथ उच्च

RRIJM 2015, All Rights Reserved

स्तर पर भी भाषा के शुद्ध, परिमार्जित एवं परिष्कृत रूप के लिए व्याकरण शिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए, जिसके अभाव में भाषा की आत्मा शून्य हो रही है| उन्होंने हिंदी भाषा की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए शोध पत्र, कार्यशाला, सेमीनार को उच्च स्तर पर जोड़ते हुए भाषा के व्यावहारिक अभ्यास का समर्थन किया|

डाईट धर्मशाला में कार्यरत एक महिला हिंदी भाषा प्राध्यापक ने भी उच्च स्तर पर प्रशिक्षु छात्रों द्वारा हिंदी भाषा में की जाने वाली उच्चारण और वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के संबंध में कहा कि छात्र मुख्यतः संयुक्त व्यंजनों, अनुस्वार और अनुनासिक स्वरों में भेद, मात्रा संबंधी, रेफ एवं रकार आदि संबंधी अशुद्धियाँ करते हैं| जिसका मुख्य कारण प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर अशुद्धियों के शोधन में कमी, श्रवण के अभाव, और उच्चारण और वर्तनी के संबंध से अनभिज्ञता हैं| उनके अनुसार उच्च स्तर पर इन अशुद्धियों के निराकरण के लिए यदि शिक्षक द्वारा प्राथमिकता देते हुए अतिरिक्त समय दिया जाए तो इन अशुद्धियों को दूर किया जा सकता है| शिक्षक के स्वयं ज्ञान और अभ्यास द्वारा छात्रों को शुद्ध उच्चारण और वर्तनी के लिए प्रेरित किया जा सकता है|

राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, धर्मशाला में कार्यरत हिंदी भाषा प्राध्यापक ने उच्च स्तर पर प्रशिक्षु छात्रों द्वारा हिंदी भाषा में उच्चारण एवं वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के संबंध में शिक्षकों का सचेत होना अनिवार्य बताया| उनके अनुसार भाषा एक माध्यम है, जो प्रत्येक विषय के ज्ञान एवं अध्ययन के लिए काफी महत्वपूर्ण है| उन्होंने हिंदी भाषा को अन्य विषयों के लिए आधार भाषा के रूप में दर्शाया भाषा के शुद्ध रूप के ज्ञान के लिए उन्होंने स्वयं प्रयास एवं भाषा प्रयोगशाला को आवश्यक बताया| वर्तमान में पाठ्यक्रम में प्रयोगशाला के प्रयोजन के बाद भी वास्तविकता में इसकी उपलब्धता की कमी पाई गई है, जिसके अभाव में छात्रों की उच्चारण और वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को दूर करने के प्रयासों में कमी आई है| उन्होंने उच्च स्तर पर शिक्षक के प्रयास, लिखित अभ्यास एवं लेखन की उचित जाँच को अपनाने पर जोर दिया| साथ ही पुस्तकों के समीक्षात्मक कार्य को 2-3 बार करने पर बल दिया| उन्होंने भाषा को अनुशासित और सार गर्भित करने के लिए भाषा में व्याकरण को आवश्यक बताया है|

राजकीय स्नातक महाविद्यालय, धर्मशाला में हिंदी विभाग में कार्यरत हिंदी आचार्य ने उच्च स्तर पर छात्रों द्वारा उच्चारण और वर्तनी संबंधित अशुद्धियों के संबंध में प्रत्येक स्वर और व्यंजन के उच्चारण स्थान के ज्ञान के अभाव, छात्र के पारिवारिक परिवेश और उसके सामाजिक प्रभाव को उत्तरदायी कारक के रूप में दर्शाया| उनके अनुसार छात्र मुख्यतः पंचम वर्ण के उच्चारण की अशुद्धियाँ करते हैं| उन्होंने यह कहा कि हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी लिपि विश्व की वैज्ञानिक लिपि है| जिसमें हर स्वर और अक्षर के उच्चारण के लिए अलग-अलग ध्वनियों की व्यवस्था है, जो हिंदी भाषा को ओर अधिक आसान बना देती है| उनके अनुसार हिंदी भाषा की मानक बोली – खडी बोली है| हिंदी भाषा में 17 बोलियों का मिश्रण है, जिसके कारण हिंदी भाषा की एकरूपता को स्थापित करना अति आवश्यक है| इन अशुद्धियों के लिए उन्होंने उच्च स्तर पर व्याकरणिक प्रावधान की कमी को उत्तरदायी बताया है|

परिणाम एवं निष्कर्ष

उच्च स्तर पर हिंदी भाषा में विद्यार्थियों की उच्चारण और वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के संबंध में उपरोक्त वर्णन से जो परिणाम प्राप्त हुए हैं, वह इस प्रकार हैं-

- प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर छात्रों में हिंदी भाषा के पूर्ण ज्ञान की कमी, स्वरों और व्यंजनों के शुद्ध प्रयोग की जानकारी के अभाव और शिक्षक द्वारा भाषा के पूर्ण ज्ञान प्रदान करने व शुद्ध मार्गदर्शन के अभाव में वह इस प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं|
- सभी स्तरों पर हिंदी भाषा संबंधी छात्रों द्वारा किये गए कार्य में उचित निरीक्षण एवं संशोधन कार्य में कमी के कारण भी छात्र उचित जानकारी प्राप्त नहीं कर पाते है| जिसके कारण उनकी भाषा अशुद्ध रहती है और वह नवीन ज्ञान की प्राप्ति के समय शब्दों और उनके द्वारा प्रस्तुत अर्थों में उलझ कर रह जाते है| इस प्रकार अशुद्ध शब्दावली तथा अशुद्ध उच्चारण व वर्तनी के कारण उन्हें अपने जीवन में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है|
- शुद्ध उच्चारण और वर्तनी के अभाव में छात्र जब शिक्षा में स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करते है तो वह शिक्षण की विधियों को तो सीख लेते हैं परन्तु शुद्ध उच्चारण और वर्तनी के अभाव में विषय को उचित रूप से समझ नहीं पाते और कई बार अपने अभ्यास कार्य के दौरान स्कूली छात्रों को भी अशुद्ध भाषा का ही शिक्षण करते जाते है जिसके कारण आने वाली पीढियां भी अशुद्ध उच्चारण और वर्तनी करती जाती हैं| इस तरह शिक्षण के दौरान भी वह शिक्षक पूर्ण ज्ञान के अभाव एवं अशुद्ध उच्चारण और वर्तनी के कारण छात्रों की अशुद्धियों के निराकरण के लिए निरीक्षण एवं संशोधन के कार्य में असमर्थ रहते हैं|
- भाषा के ज्ञान के अभाव में छात्र अन्य विषयों में ज्ञान से संबंधित तथ्यों के आत्मसातीकरण में समस्या अनुभव करते है जिसके कारण उनकी ग्राह्य क्षमता क्षीण हो जाती है और वह ज्ञान के क्रमिक रूप को ग्रहण नहीं कर पाते हैं| उच्च स्तर पर स्नातक और शिक्षक प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम में उच्चारण और वर्तनी संबंधी त्रुटियों के निराकरण की कोई उचित व्यवस्था

RRIJM 2015, All Rights Reserved

नहीं है जिसे भारतीय शिक्षा नीति की कमी के रूप में भी देखा जा सकता है|

- प्राथमिक व माध्यमिक स्तर के साथ-साथ उच्च स्तर पर भी भाषा के शुद्ध, परिमार्जित एवं परिष्कृत रूप के लिए व्याकरण शिक्षण की व्यवस्था के अभाव में भाषा की आत्मा शून्य हो रही है| वर्तमान में पाठ्यक्रम में प्रयोगशाला के प्रयोजन के बाद भी वास्तविकता में इसकी उपलब्धता की कमी पाई गई है, जिसके अभाव में छात्रों की उच्चारण और वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को दूर करने के प्रयासों में कमी आई है|

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि हिंदी भाषा में उच्चारण और वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को दूर करने के लिए शिक्षक ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है| सेवापूर्व एवं सेवारत प्रशिक्षण में भाषा के शुद्ध रूप के प्रयोग के लिए प्रोत्साहन देकर छात्रों की भाषा संबंधित दैनिक समस्याओं को कम किया जा सकता है| भाषा संबंधी अभ्यास कार्य एवं अध्यापक के सफल निरीक्षण से भी इस समस्या को कम किया जा सकता है| समाज में अशुद्ध उच्चारण और वर्तनी से भाषागत अशुद्धियां तो फैलाती है साथ ही ज्ञान का उचित एवं सार्थक प्रवाह भी नहीं हो पाता है| जब शिक्षक शुद्ध भाषा का प्रयोग नहीं करता है तो छात्र भी उसी के पदचिह्नों पर चलते हुए भाषा के महत्त्व को अस्वीकार कर समाज में अपना सफल योगदान देने में असमर्थ रहते है|

उपाय एवं सुझाव

उच्च स्तर पर हिंदी भाषा में उच्चारण और वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के निराकरण की बहुत आवश्यकता है| जिसके लिए कुछ सुझाव एवं उपाय दिए जा सकते हैं-

- प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर हिंदी व्याकरण के शिक्षण पर जोर दिया जाना चाहिए ताकि छात्र भाषा के सभी नियमों को उचित रूप से आत्मसात कर ले|
- सभी स्तरों पर भाषा अध्यापकों को अपने छात्रों के भाषाई कौशलों के विकास के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए| अध्यापकों को छात्रों के श्रवण, अभिव्यक्ति, पठन और लेखन सभी कौशलों के विकास के लिए विभिन्न शिक्षण विधियों जैसे- वार्तालाप, भाषण प्रतियोगिता, प्रश्न-उत्तर विधि, लेखन प्रतियोगिताएँ, दृश्य-श्रव्य साधनों के प्रयोग, भाषा प्रयोगशाला आदि का उचित प्रयोग करना चाहिए|
- अपनी भाषा को शुद्ध करने के लिए छात्रों को स्वयं अभ्यास कार्य करते रहना चाहिए | भाषा एक अभ्यासात्मक कार्य है| यह तभी सीखी जा सकती है, जब छात्र स्वयं प्रयत्न कर बार-बार पढ़ने व लिखने का कार्य करेगा|
- स्नातकोत्तर स्तर पर भाषा विज्ञान के ज्ञान को व्यावहारिक रूप से अभ्यास में प्रस्तुत करने पर जोर दिया जाना चाहिए| उच्च स्तर पर व्याकरण शिक्षण द्वारा ही शिक्षा के स्तर में हो रही गिरावट को रोकने के लिए परिसंवाद विधि द्वारा विषय क्षेत्र के अग्रणी व्यक्तित्वों के व्याख्यान, भाषा के लिखित व मौखिक रूप के अभ्यास से संबंधित कार्यशाला के आयोजन, विषयानुसार चर्चा-परिचर्चा एवं प्रश्नोत्तर विधि के प्रयोग पर बल दिया जाना चाहिए|
- प्राथमिक स्तर पर पठन-पाठन एवं लेखन अभ्यास को महत्त्व देने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए| पुस्तकों में पाई जाने वाली अशुद्धियों के संबंध में उन्होंने पुस्तकों के समीक्षात्मक अध्ययन पर जोर दिया जाना चाहिए|
- छात्रों की भाषागत अशुद्धियों को दूर करने के लिए संस्कृत शिक्षकों द्वारा व्याकरण शिक्षण संबंधी व्यवस्था होनी चाहिए|
- भाषा प्रयोगशाला की व्यवस्था के लिए सरकार द्वारा उचित कदम उठाये जाने चाहिए|
- NCERT एवं SCERT द्वारा भाषा निर्देशित कार्यशाला की व्यवस्था एवं पुस्तकों के समीक्षात्मक कार्य में शिक्षकों को जोड़ने से संबंधित प्रावधान करने चाहिए
- उच्च स्तर पर इन अशुद्धियों के निराकरण के लिए शिक्षक द्वारा प्राथमिकता देते हुए अतिरिक्त समय दिया जाए तो इन अशुद्धियों को दूर किया जा सकता है| शिक्षक के स्वयं ज्ञान और अभ्यास द्वारा छात्रों को शुद्ध उच्चारण और वर्तनी के लिए प्रेरित किया जा सकता है|
- अध्यापकों को उनके सेवाकाल के दौरान भी समय-समय पर विभिन्न कार्यशालाओं, परिचर्चाओं एवं संबंधित प्रतिवेदनों के माध्यम से ज्ञानवर्धित करते रहना चाहिए|
- प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तरों पर भाषा के व्याकरणिक ज्ञान पर अत्यधिक जोर दिया जाना चाहिए|
- प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में छात्रों द्वारा पठन के अभ्यास को महत्त्व दिया जाना चाहिए|

निष्कर्ष

वर्तमान समय में कक्षा कक्ष को सही आकार देने के लिए छात्रों के अध्ययन और पठन पर जोर देना होगा ताकि छात्र बिना रुके तथा शुद्ध रूप में उच्चारण और वर्तनी करते हुए भाषा के शुद्ध रूप से अर्थ संगत ज्ञान ग्रहण कर सके| छात्रों के शुद्ध अध्ययन के लिए अध्यापकों द्वारा हिंदी भाषा में शुद्ध उच्चारण और शुद्ध वर्तनी की आवश्यकता होती है| जिसके लिए

RRIJM 2015, All Rights Reserved

छात्रों को प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च स्तर पर हिंदी भाषा के व्याकरण का ज्ञान देना होगा | साथ ही उनके भाषिक अध्यास पर ध्यान देने की आवश्यकता है| जब छात्र प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा का शुद्ध रूप में प्रयोग नहीं कर पाता तो वह अन्य विषयों में भी पिछड़ता जाता है| जैसे-तैसे माध्यमिक स्तर पर पहुँचता है तो वह पाठ के पठन में हिचकिचाता है, तथा ज्ञान को सामान्य गति से ग्रहण करने में भी सक्षम नहीं हो पाता| छात्रों के शुद्ध उच्चारण और वर्तनी के लिए अध्यापकों के वक्तव्यों और लेखनी का शुद्ध होना आवश्यक है तथा अध्यापकों की भाषा में शुद्धता लाने के लिए उन्हें भाषा के शुद्ध रूप से अवगत करना होगा, जिसके लिए अध्यापकों को सेवापूर्व एवं सेवारत भाषिक प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है| हिंदी भाषा का आधार स्कूल के प्रारंभिक समय में ही मजबूत होता है| परन्तु किसी कारण वश यदि वह आधार मजबूत न हो तो अध्यापक का यह कर्तव्य होता है कि वह हर स्तर पर छात्रों की शिक्षा से संबंधित सभी समस्याओं का समाधान निकालने में उनकी सहायता करे|

ग्रन्थ सूची

- दहिया इंदु, 2014, "वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के उपचारीकरण में अधेता केंद्रित तथा कार्यकलाप आधारित अधिगम-अध्यापन उपागम की प्रभावशीलता का प्रायोगिक अध्ययन", अन्वेषिका: भारतीय अध्यापक शिक्षा की शोध पत्रिका, रिट्रीवड किया गया है- www.ncte-india.org/ncte-new.
- डॉ. दास श्यामसुंदर (2009). "भाषा विज्ञान" प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली.
- डॉ. मंगल उमा (1998). "हिंदी शिक्षण" आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली, 7-80.
- डॉ. सूद विजय (2001) "हिंदी शिक्षण विधियाँ", टंडन पब्लिकेशन, लुधियाना.
- डॉ. तिवारी भोलानाथ (2016). "हिंदी भाषा की संरचना", वाणी प्रकाशन, दिल्ली.
- डॉ. तिवारी भोलानाथ एवं डॉ. किरण बाला (2018). "हिंदी वर्तनी की समस्याएं एवं मानकीकरण" अमरसत्य प्रकाशन, दिल्ली.
- डॉ. बाहरी हरदेव (2017) "हिंदी भाषा", अभिव्यक्ति प्रकाशन.
- भानुशाली एन.जी.(1985) "एन इन्वेस्टीगेशन इंटु दा बेसिक हिंदी वोकेबलरी ऑफ हिंदी स्पीकिंग चिल्ड्रन ऑफ क्लास फिफ्थ", इन ग्रेटर बॉम्बे, एजुकेशन बॉम्बे यूनिवर्सिटी.
- गोमती एम.एस. (1982). "केरल के उच्च माध्यमिक के विध्यार्थ्यों को हिंदी वर्तनी में होने वाली कठिनाइयों का निदानात्मक अध्ययन, पीएच.डी., केरल यूनिवर्सिटी.
- कपाडिया एस.डी. (1988). "महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्र-छात्राओं हेतु अंग्रेज़ी भाषा में निदानात्मक शिक्षण के किये कार्य योजना का निर्माण एवं परीक्षण", पीएच.डी. शिक्षा, गुजरात विश्वविद्यालय.
- मित्तल एस.(1991) "संस्कृत शिक्षाने निदानात्मक परीक्षणस्य च प्रभाव", पीएच.डी. एजुकेशन, केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ.
- मोहम्मद टी.के. (1986). "छात्रों को अंग्रेजी लेखन में आने वाली त्रुटियों का निदानात्मक अध्ययन", पीएच.डी. शिक्षा, कालीकट विश्वविद्यालय.
- रानी समिधा (2004). "विद्यालय छात्राणाम संस्कृत संबंधी वाचिक त्रुटीनाम निवारणाय समाधानात्मक शिक्षण प्रभावस्य समीक्षात्मकध्ययनम", पीएच.डी. एजुकेशन, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली.
- श्रीनिवास राव आर.ए. (1982). "स्कूली बच्चों की पठन अयोग्यता का निदानात्मक अध्ययन", पीएच.डी., शिक्षा विभाग, सैयानी राव बड़ौदा विश्वविद्यालय.
- शुक्ला पी. (1998) "प्राथमिक कक्षा में हिंदी की वर्तनी की त्रुटियों के कारण और निवारण", पीएच. डी. शिक्षा , बम्बई विश्वविद्यालय.
- त्रिपाठी दी. (2010). "विद्यार्थियों की हिंदी की उच्चारण व लेखन संबंधी त्रुटियों का निदानात्मक व उपचारात्मक परीक्षण, पीएच. डी. शिक्षा, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर.

RRIJM 2015, All Rights Reserved